ResearchNext International Multidisciplinary Journal
Vol- 2, Issue- 1, January-March 2026 ISSN (O)- 3107-9725
Email id: editor@researchnextjournal.com Website- www.researchnextjournal.com

प्राचीन विद्या–केन्द्र के रूप में वैशाली की भूमिकाः विशेषकर बौद्ध एवं जैन धर्म के संदर्भ में

प्रीति कुमारी

यूजीसी नेट (जेआरएफ) शोध छात्रा, इतिहास विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना, बिहार

Article Info: *(Recieved- 22/12/2025, Accept- 02/02/2026, Published- 10/02/2026)*
DOI- 10.64127/rnimj.2026v2i1004

सारांश

वैशाली का इतिहास प्राचीन भारत की समृद्ध ज्ञान–परंपरा और धार्मिक–सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण अध्याय प्रस्तुत करता है। यह नगर न केवल एक प्राचीन गणराज्य के रूप में प्रसिद्ध था, बल्कि बौद्ध एवं जैन धर्म के प्रमुख विद्या–केन्द्र के रूप में भी प्रतिष्ठित रहा। वैशाली में स्थापित महाविहार, संघीय शिक्षण परंपराएँ और आचार्यों की विद्वत् परंपरा ने इसे शिक्षा, दर्शन और नैतिक जीवन–मूल्यों के प्रसार का महत्वपूर्ण केंद्र बनाया। बौद्ध परंपरा में यहाँ विहारों, धर्मोपदेश और ध्यान–प्रणालियों के माध्यम से ज्ञान का विकास हुआ, जबकि जैन धर्म के आचार्यों ने अहिंसा, संयम और आत्म–शुद्धि पर आधारित शिक्षण पद्धति का विस्तार किया। वैशाली की सामाजिक–आर्थिक संरचना, व्यापारिक संपर्क और सांस्कृतिक विविधता ने इसकी विद्या–परंपरा को और अधिक समृद्ध किया। यहाँ के विद्वानों, ग्रंथ–परंपरा और शैक्षणिक विमर्श ने दार्शनिक और नैतिक चिंतन को नई दिशा प्रदान की। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो वैशाली ने दोनों धर्मों के बीच वैचारिक संवाद और सह–अस्तित्व की भावना को बढ़ावा दिया। आधुनिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र प्राचीन भारतीय शिक्षा, नैतिकता और सामाजिक समरसता के अध्ययन का महत्वपूर्ण आधार है। इस प्रकार, वैशाली का योगदान प्राचीन विद्या–केन्द्र के रूप में भारतीय ज्ञान–संस्कृति और धार्मिक शिक्षा के विकास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द– वैशाली, विद्या–केन्द्र, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, नैतिक शिक्षा, प्राचीन शिक्षा।

1. प्रस्तावना

वैशाली का इतिहास न केवल स्वतंत्रता की धाराओं का परिचायक रहा है, बल्कि यह प्राचीन काल से ही ज्ञान और शिक्षा का केन्द्र भी रहा है। इस क्षेत्र का सांस्कृतिक व धार्मिक इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है, जिसने भारतवर्ष की बौद्ध एवं जैन धर्म की प्रवृत्तियों को अपने अधीन किया। प्राचीन काल में यहां का समाज उच्च कोटि की विद्या–परंपरा का प्रतिनिधित्व करता था, जहां विद्वानों का संगम एवं शिक्षण की विविध परंपराएँ विकसित हुईं। वैशाली का स्थान विशिष्ट पुनर्रचित विद्या–केंद्र के रूप में स्थापित हुआ, जिसने न सिर्फ धार्मिक बल्कि लौकिक जीवन के नैतिक और दार्शनिक अनुशासन भी प्रदान किए। यहां स्थापित महाविहार विश्वप्रसिद्ध थे, जहां न केवल बौद्ध शिक्षण संस्थानों का विकास हुआ, बल्कि उनकी शिक्षण प्रणाली ने अनेक छात्रो को परिष्कृत किया। साथ ही, जैन धर्म की शिक्षाएं भी इस क्षेत्र में विस्तार पाई, जिन्होंने नैतिक जीवन और साधना के व्यावहारिक मार्ग को विकसित किया। वैशाली का यह सांस्कृतिक एवं विद्या–केन्द्र का इतिहास उसकी विशिष्टता का परिचायक है, जिसने प्राचीन भारतीय ज्ञान–संस्कृति में एक अनूठा स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार, वैशाली का इतिहास एवं उसकी विद्या–परंपरा आज भी हमारे संसघ्र्ति और धर्मिक धरोहर में समग्रता का अवदान देते हुए अध्ययन एवं अनुकरण का माध्यम बनी हुई है।[1]

2. वैशाली का ऐतिहासिक परिचय

वैशाली का ऐतिहासिक परिचय अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। यह स्थल अपने समय में स्वतंत्र राज्य के रूप में विकसित हुआ, जिसकी स्थापना लगभग 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में माघधि वंश के राजा सहास्रवर्ण ने की थी। वैशाली का नाम न केवल राजनीतिक शक्ति के कारण प्रसिद्ध हुआ, बल्कि इसकी बौद्ध एवं जैन धर्म के केन्द्र के रूप में विशिष्ट भूमिका ने इसे धार्मिक एवं शैक्षिक केंद्र के रूप में भी प्रतिष्ठित किया। इस क्षेत्र का सांस्कृतिक और आर्थिक विकास उसकी भौगोलिक स्थिति एवं व्यापारिक संपर्कों के कारण असाधारण था, जिसने यहाँ के समाज को ज्ञान और शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अत्यधिक प्रगति करने का अवसर प्रदान किया। इतिहास भलीभाँति सूचित करता है कि वैशाली उन प्रथम नगरों में से था, जिसने लोकतांत्रिक परंपराओं एवं कला, साहित्य, विज्ञान के संरक्षण तथा प्रचार में अग्रणी भूमिका निभाई। यहाँ का साहित्यिक एवं शिक्षाप्रणाली का स्वरूप उसकी समृद्ध परंपराओं एवं धर्मिक श्रद्धाओं का समन्वित दृष्टि से विकास दर्शाता है। पुरालेख एवं अभिलेख इस बात के संकेत हैं कि वैशाली न केवल राजनीतिक राजधानी थी, बल्कि यहाँ के विद्वान एवं शिक्षक प्राचीन भारत के ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न अंगों में विशेषज्ञता रखते थे। इस केंद्र की ऐतिहासिक प्रगति उसके धार्मिक महत्व के साथ जुड़ी हुई है, जिसने बौद्ध एवं जैन धर्म की स्थापना एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस तरह, वैशाली का इतिहास उसकी धार्मिक, शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं के संम्पन्न और सम्पन्न स्वरूप का परिचायक है, जिसने भारतीय सभ्यता के उत्क्रमण में एक प्रमुख भूमिका निभाई।[2]

3. प्राचीन विद्या–केन्द्र के रूप में वैशाली की संरचना

प्राचीन वैशाली का समृद्ध विद्याकेंद्र के रूप में आधार उसकी संरचनात्मक व्यवस्था में निहित है, जो न केवल शिक्षा एवं कला के क्षेत्र में व्यापक प्रभाव रखती थी, बल्कि उसमें सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों का भी समावेश था। यहाँ का विद्यालयीय ढांचा विभिन्न स्तरों पर विभक्त था, जिसमें तपस्थियों, आचार्यों एवं गुरुदयों का सहयोग स्थापित था। शिक्षण संस्थान विशेषकर वाग्देवी, मुनि एवं आचार्यों की सभा के रूप में विकसित हुए, जो शिक्षार्थियों के लिए ज्ञानार्जन के केन्द्र बने। विश्वस्तरीय शिक्षा–पद्धतियों का विकास यहाँ हुआ, जिनमें नैतिक और दार्शनिक शिक्षाएं प्रमुख थीं। वैशाली के प्राचीन विद्या–केन्द्र का स्वरूप ऐसा था कि यह बौद्ध एवं जैन धर्म दोनों के शिक्षण एवं अध्ययन का मुख्य स्थल था, जहाँ धार्मिक तथा तांत्रिक विद्याओं का मेल होता था।[3] बौद्ध महाविहार में शिक्षकों एवं अनुयायियों का समूह इस हेतु समर्पित था, और यहाँ विभिन्न भाषाओं एवं विषयों का अध्ययन किया जाता था। इसी क्रम में, जैन विद्यालयों ने भी अपने शिक्षण मंडप स्थापित कर नैतिकता, योग और दर्शन के अध्ययन को संरचित किया। इन संस्थानों का माहौल तप, अभ्यास और ज्ञान प्राप्ति का ह्रदय स्थल था, जिससे स्थानीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों के विद्वान प्रभावित होते थे। वैशाली की संरचना ऐसी थी कि सामाजिक जीवन के विविध आयामों में शिक्षा का निरंतर प्रवाह बना रहा। यहाँ की विद्या–परम्परा न केवल धार्मिक प्रचार–प्रसार का माध्यम थी, बल्कि यह सामाजिक समरसता, नैतिकता और आध्यात्मिक उन्नति का आधार भी थी। इस प्रकार, वैशाली के प्राचीन विद्या–केन्द्र की संरचना उसकी योग्यता, उसकी शिक्षण परंपरा एवं उसके समय की सामाजिक आवश्यकताओं का सुंदर मिश्रण थी, जिसने उसे एक विशिष्ट सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्था के रूप में स्थापित किया।[4]

4. बौद्ध धर्म के संदर्भ में वैशाली

वैशाली का बौद्ध धर्म के संदर्भ में विशेष महत्त्व है, जिसने यहाँ की शिक्षण परंपरा और धार्मिक गतिविधियों को समृद्ध किया। प्रथम, महाविहार का अस्तित्व इस क्षेत्र में बौद्ध जीवन का केंद्रीय आधार रहा है, जहाँ बुद्धाचार्यों द्वारा विद्या का अध्ययन और शिक्षण सम्पादन किया जाता था। इन विशाल विहारों में धार्मिक कर्मकांड की प्राचीन परंपराएँ विकसित हुईं और साथ ही शिक्षा के विविध मंच स्थापित हुए।[5]

साथ ही, वैशाली में बौद्ध साहित्य का क्षैत्र भी अत्यंत समृद्ध रहा। यहाँ अनेक ग्रंथों, पदावली और उपनिषदों का लेखन हुआ, जो न केवल धर्म का प्रचारण करते थे बल्कि नैतिक एवं दार्शनिक विचारों का भी संवाहक थे। इन ग्रंथों के अध्ययन से गुरु–शिष्य परंपरा का विकास हुआ, जिससे विद्या का संचालन निरंतर जारी रहा। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि वैशाली का यह स्थल शिक्षाप्रदत्ता एवं विमर्श का केन्द्र रहा है। बौद्ध धर्म के शिक्षण संस्थानों ने नैतिक और दर्शनिक मूल्यों का प्रचार किया, जिससे मानवीय समरसता और धर्मिक जागरूकता का संचार हुआ। यहाँ के आश्रम और विहार न केवल ध्यान, ध्यानात्मक अभ्यास, और धर्मोपदेश के केन्द्र थे, बल्कि

उनके माध्यम से आपसी सहिष्णुता और समर्पित जीवन का मार्ग भी प्रशस्त किया गया। इस प्रकार, वैशाली ने न केवल धार्मिक परंपरा को संरक्षण दिया, बल्कि यहाँ के शिक्षण संस्थान समाज में बौद्ध सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार का केंद्र बनें। इस धरा पर बौद्ध धर्म के प्राचीन विद्या–केन्द्र का उद्भव और विकास, नैतिक जीवन मूल्यों एवं शिक्षाप्रणालियों का संरक्षण करता रहा, जो आज भी उसकी ऐतिहासिक एवं शैक्षिक महत्ता को दर्शाता है।[6]

4.1. महा–विहार और शिक्षा–प्रकाशन

महाविहार एवं शिक्षा प्रकाशन की व्यवस्था वैशाली में प्राचीन विद्याओं के प्रसार एवं संरक्षण का मुख्य आधार रही है। यहाँ के महाविहार न केवल धार्मिक अनुष्ठान एवं साधना का केंद्र थे, बल्कि शिक्षण एवं अध्ययन के लिए एक विकसित संस्थान के रूप में भी काम करते थे। इन विहारों में विद्वानों का आगमन होता था, जिन्होंने बौद्ध एवं जैन ग्रंथों का अध्ययन, अनुवाद एवं संरक्षण किया। विशेष रूप से महाविहार में सुगम आवास व्यवस्था, विशाल पुस्तकालय एवं शिक्षण कक्षाएं निर्माण की गई थीं, जिनके कारण इन केंद्रों का शिक्षण कार्य अत्यंत प्रभावी रहा। इन शिक्षण संस्थानों में वेद, उपनिषद, प्राचीन बौद्ध ग्रंथ एवं जैन ग्रंथों का अध्ययन किया जाता था, और ये ग्रंथ पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलने वाली शिक्षण परंपराओं का अभिन्न हिस्सा रहे। इनके माध्यम से न सिर्फ धार्मिक शिक्षा को प्रचारित किया गया, बल्कि नैतिक एवं दार्शनिक विचार भी प्रोत्साहित हुए। महाविहार के प्रकाशन कार्य में हस्तलिपियों का संरक्षण एवं प्रकाशन अनिवार्य था, जिसके कारण विद्या का प्रसार व्यापक स्तर पर हुआ। इन विहारों के शिक्षण पद्धतियों ने धीरे–धीरे समाज में बुद्धि, नैतिकता एवं सदाचार के मूल सिद्धांतों का संचार किया। विशिष्ट शैक्षणिक परिसरों में अध्ययन एवं शोध के रूप में विकसित इन केंद्रों ने वैशाली को प्राचीन भारतीय संस्कृ ति एवं ज्ञान का महत्त्वपूर्ण केंद्र बनाया। अंततः, ये विद्यापीठ शिक्षा और वैचारिक उन्नति का मुख्य माध्यम बनकर, वैशाली के ऐतिहासिक एवं शैक्षिक स्वरूप को परिभाषित करने में सहायक सिद्ध हुए।[7]

4.2. उपन्यासक साहित्य और विद्या–संस्थान

वैशाली का इतिहास और उसकी प्राचीन विद्यापीठ के रूप में भूमिका बहुआयामी रही है। विशेष रूप से, यहां का उपन्यासक साहित्य एवं विद्या–संस्थान विश्वभर में प्रसिद्ध रहे हैं। इन शिक्षालयों में वाचन, लेखन, दर्शन और कला की विविध विधाएं विकसित हुईं, जिनसे न केवल तत्कालीन समाज का मानसिक एवं नैतिक विकास हुआ, बल्कि इनके प्रभाव आज भी इतिहास में देखने को मिलते हैं। वैशाली में रचित उपन्यासक ग्रंथों में जीवन के नैतिक मूल्यों, धर्म–दर्शन और सामाजिक सद्भाव का विस्तृत प्रकाशन हुआ है। यह साहित्यिक परंपरा ज्ञान के प्रचार–प्रसार का सशक्त माध्यम बनी, जिसने समाज में जागरूकता और सांस्कृतिक समृद्धि को बढ़ावा दिया।[8]

इसके अतिरिक्त, यहाँ के विद्या–संस्थान ने विभिन्न सम्बद्ध विद्याओं का समन्वय करके एक प्रभावशाली शैक्षिक केंद्र का रूप धारण किया। विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन, विवेक और तर्क–विवेचन की अपार परंपरा विकसित हुई, जिसने ज्ञान के विविध आयाम स्थापित किए। यहाँ के विद्वान् प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन, प्रकाशन और संरक्षण करते हुए अपने विद्यार्थियों में नैतिक और दार्शनिक शिक्षा के उच्च मानकों का संधान करते थे। इन विद्या–संस्थानों ने न केवल बौद्ध एवं जैन धर्म के धार्मिक ग्रंथान का संस्कृत भाषण एवं संरक्षण किया, बल्कि इन धर्मावलम्बियों के नैतिक मूल्यों तथा जीवन–दर्शन का प्रचार भी किया।

अतः, वैशाली का उपन्यासक साहित्य एवं विद्या–संस्थान न केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा का केंद्र थे, बल्कि वे समाज के नैतिक एवं बौद्धिक उत्कर्ष का आधार भी बने। इन संस्थानों का संरक्षण और प्रसार तत्कालीन समाज को उच्च नैतिक मूल्य एवं ज्ञान के प्रकाश में विकसित करने में सहायक रहा, जिससे वैशाली का नाम इतिहास में एक प्राचीन विद्या–केन्द्र के रूप में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हुआ।[9]

4.3. जैव–धर्म और नैतिक शिक्षा

वैशाली में जैव–धर्म एवं नैतिक शिक्षा का प्रवर्तन एक महत्वपूर्ण मानी जाती है, जिसने इस क्षेत्र को आदर्श धार्मिक एवं नैतिक जीवन के केंद्र के रूप में स्थापित किया। जैन धर्म के विश्वसनीय शिक्षकों एवं पर्यावरणीय अनुरूपताओं ने यहाँ के नैतिक मानदंडों को व्यापक बनाने में योगदान दिया। जैव–धर्म की शिक्षाएँ प्रमुख रूप से अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह पर केंद्रित हैं, जो न केवल व्यक्तिगत स्वच्छता एवं नैतिकता का आधार हैं, बल्कि समाज में सद्भाव एवं पारस्परिक संवाद को भी सुदृढ़ बनाते हैं। इन शिक्षाओं का उद्देश्य मानव जीवन को शुद्ध, धर्मनिष्ठ एवं सहिष्णु बनाना है, जिसके माध्यम से जीवित प्राणियों के प्रति करुणा एवं सम्मान का भाव जागृत होता है। वैशाली की नैतिक शिक्षाओं में जीवन के प्रत्येक चरण में आचरण और व्यवहार के प्रति

जागरूकता एवं जिम्मेदारी का अभिप्राय है।

यहाँ के नैतिक शिक्षा संप्रदायिक सद्भाव और सामाजिक समरसता को भी बढ़ावा देते हैं। जैन एवं बौद्ध परंपराओं में समान रूप से, नैतिक एवं जीवनमूल्यों की स्थापना का प्रयत्न हुआ है, जो समाज को दया, सहिष्णुता एवं नैतिक अधिकारों का सम्मान सिखाते हैं। विशेष रूप से, सामाजिक जीवन में नैतिकता का पालन, अपने कर्तव्यों का निर्वाह और असत्याचार से विरक्ति पर बल दिया गया है। इन शिक्षाओं का उद्देश्य न केवल व्यक्तिगत मोक्ष की ओर प्रेरित करना है, बल्कि समाज में स्थिरता, सद्भाव और न्याय सुनिश्चित करना भी है। इस प्रकार, वैशाली का जैव–धर्म एवं नैतिक शिक्षा का क्षेत्र इसे अपने प्राचीन विद्या केन्द्र के रूप में अक्षुण्ण बनाए रखते हुए, आज भी धार्मिक एवं नैतिक मूल्य स्थापित करने का महत्वपूर्ण केंद्र बना हुआ है।

5. जैन धर्म के संदर्भ में वैशाली

वैशाली का उल्लेख जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में विशेष महत्व रखता है। यहाँ जैन संगठनों और आचार्यों ने अपने शिक्षण तथा सिद्धान्त विकसित करने में इस स्थल का केंद्रबिंदु बनाया। वैशाली में जैन शिक्षण परंपरा का आरंभ अतिशीघ्र ही हुआ, जहाँ महापुरुषों ने अपने उपदेश और शिक्षण कार्यों का संचालन किया। इस क्षेत्र में अनेक आचार्यों का निवास रहा, जिन्होंने जैन धर्म के सिद्धान्तों को विकसित करने और प्रचारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वैशाली का स्थान न केवल धार्मिक बल्कि बौद्ध और जैन मतांतरण के बीच एक बैलेंस का प्रतीक रहा है। यहाँ पर आचार्य और विद्वानों की मंडलियाँ संगठित थीं, जो धर्म के विस्तृत शिक्षण एवं नैतिक संस्कारों को फैलाने में सक्रिय रहे। परंपरागत पाठशालाएँ और विद्या–केंद्र भारत के अन्य भागों की तुलना में यहाँ अधिक विकसित थे, और यहाँ के शिक्षक विद्यार्थियों को जैन दर्शन एवं आचार के अनुरूप जीवन जीने की प्रेरणा देते थे। समकालीन संदर्भ में भी वैशाली का जलवायु एवं सामाजिक संरचना जैन दर्शन और नैतिक शिक्षा के प्रसार में सहायक सिद्ध हुई। इस प्रकार, वैशाली का इतिहास और उसकी विद्या–परंपरा जैन धर्म के विकास में एक सशक्त आधार माना जाता है, जिसने न केवल धार्मिक विचारों का विस्तार किया बल्कि नैतिक एवं शिक्षाप्रद जीवन के मूलमंत्र को भी समाज में प्रवर्तित किया।

5.1. सांगना–स्थापना और शिक्षण–परंपरा

सांगना–स्थापना और शिक्षण–परंपरा का वैशाली में विशेष महत्त्व रहा है। जैन धर्म के अनुयायियों द्वारा प्रारंभिक काल में ही इस स्थल पर शिक्षण केन्द्र स्थापित किए गए, जो धार्मिक और नैतिक शिक्षा का विश्वसनीय माध्यम बन गए। इन केन्द्रों का उद्देश्य केवल धार्मिक उपदेश प्रदान करना ही नहीं था, बल्कि तत्वदर्शी ज्ञान एवं नैतिक मूल्यों का प्रसार भी था। इस शिक्षण परंपरा में श्रमण–शिक्षकों एवं आचार्यों का महत्वपूर्ण स्थान था, जिन्होंने अपने विद्यार्थियों को जीवन के आधारभूत नैतिक मूल्यों से अवगत कराया।[10]

वैशाली में स्थापित सांगना–स्थापना उन स्थलों में से एक है, जहां शिक्षा, साधना और अध्ययन का सतत वातावरण विकसित हुआ। यहाँ के आचार्यों ने अपने शिष्यों को न केवल धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कराया, बल्कि स्वयं के आचरण के द्वारा भी अनुशासन और नैतिकता का पाठ पढ़ाया। शिक्षा के इस क्रम में मौखिक प्रवचन, पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन, और दार्शनिक वार्तालाप शामिल थे, जो ज्ञान के आदान–प्रदान में सहायक थे। इन शिक्षण केन्द्रों का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण था, जिससे छात्र न केवल धार्मिक ज्ञान से ओतप्रोत होते बल्कि समाज में नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व भी समझते। सांस्कृतिक एवं धार्मिक आयोजनों के माध्यम से इन शिक्षण स्थलों ने समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई। यहाँ का विद्यार्थियों के बीच संवाद, बहस और विमर्श की परंपरा विकसित हुई, जिसने ज्ञान के स्वरूप को समृद्ध किया। सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में आचार्यों का दृष्टिकोण व विद्वता महत्वपूर्ण थी, जिसने वैशाली को विद्या का एक केंद्र बना दिया। इस परंपरा ने न केवल जैन धर्म के सिद्धांतों को प्रभावी ढंग से प्रसारित किया, बल्कि समाज के नैतिक आधार को मजबूत करने में भी योगदान दिया। वैशाली की सांगना–स्थापना ने भारतीय शिक्षा परंपरा को समृद्ध बनाते हुए, योग्यता एवं नैतिकता की शिक्षा को आधारभूत बनाया।

5.2. आचार्यों का केन्द्र और आचार–विचार

आचार्यों का केन्द्र और आचार–विचार वैशाली में जैन धर्म के स्थापत्य एवं शिक्षण परंपरा का अभिन्न अंग थे। यहाँ के आचार्यों ने धार्मिक और दार्शनिक विचारधाराओं का समुचित संवर्धन किया। जैन आचार्यों की शिक्षाएँ श्रम, तपस्या और नैतिक मूल्यों पर केंद्रित थीं, जिन्होंने समाज को सत्य, अहिंसा और आत्म–सुधार का माध्यम

प्रदान किया। वैशाली में प्रारंभिक दौर से ही आचार्यों का स्थान सर्वोपरि रहा, जहां उनकी शिक्षाएँ न केवल धर्म का आधार थीं, बल्कि सामाजिक एवं शिक्षाप्रद थीं। इन आचार्यों ने तत्कालीन समाज के नैतिक मूल्यों का निरंतर पुनर्मूल्यांकन किया और नए विचारों का समावेश किया। उनके विचारों का संश्लेषण जैन शिक्षा–पद्धति का आधार बना। उनके शिक्षाविधियों और विचारधाराओं ने पाठ्यक्रम एवं शिक्षण पद्धतियों में नवीनता लाकर ज्ञान के प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। विशेषतः, उनका ध्यान दार्शनिक–अंतर्निहित सत्यों की खोज और आचार्यावली के पालन पर था, जो नैतिकता और अध्ययन दोनों का समागम था। इस केन्द्र ने न केवल धार्मिक शिक्षा का स्थायी स्थान बनाया, बल्कि नैतिक और दार्शनिक विमर्श का मंच भी प्रदान किया। परिणामस्वरूप, वैशाली का आचार्यों का केन्द्र, अध्यात्मिक और विद्यानिष्ठ विचारधारा का साक्षात प्रतिनिधित्व करता है, जो जैन धर्म के साथ–साथ व्यापक सामाजिक एवं शैक्षिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता रहा। इस प्रकार, आचार्यों का केन्द्र वैशाली में समकालीन और परंपरागत आचार–विचार का स्नायुमंडल बन चुका था, जिससे समग्र जीवन मूल्य एवं ज्ञान पद्पथों का सृजन हुआ।[11]

5.3. सिद्धान्तिक–विकास और पाठ–परंपरा

सिद्धान्तिक–विकास और पाठ–परंपरा के संदर्भ में वैशाली का योगदान विशिष्ट महत्व रखता है। जैनेन्द्रधर्म के अध्ययन और शिक्षा प्रणाली के विकास में यहाँ की ऐतिहासिक पाबंदियों एवं आत्मिक अनुशासन ने विशिष्ट भूमिका निभाई है। यहाँ के जैन आचार्यों ने अपने तत्त्वज्ञान एवं दर्शन के पथ का विकास क्रमिक रूप से किया, जिसमें उनके विचार एवं शिक्षाएँ समय के साथ विकसित होकर नए शैलियों में परिवर्तित हुईं। इन आचार्यों की घ्परंपरा में सतत् विचार–विमर्श, तत्त्वार्थ की व्याख्या, एवं शिक्षण पद्धति का परिष्कार हुआ। सम्प्रति तक, इन पाठ्य परंपरा में प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन, तत्त्वज्ञान की व्याख्या, तथा नैतिक–आचार के आधारभूत सिद्धांत सम्मिलित हैं। यह परंपरा वैशाली में विकसित होकर जैन विमर्श के समुचित संरचनागत ढाँचे का आधार बनी। इन्हीं आधारभूत सिद्धांतों ने न केवल धार्मिक शिक्षा को स्थापित किया बल्कि सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के संरक्षण में भी सहायक सिद्ध हुए। यहाँ के दार्शनिक मार्गों ने तत्त्व का विश्लेषण किया, नैतिक विचारधाराओं का परिमार्जन किया और तर्क एवं वाक्यों के माध्यम से ज्ञान के प्रसार में भूमिका निभाई। इस पाठ–परंपरा का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह न केवल आचार व्यवस्था का आधार है, बल्कि जैन आचार्यों के दर्शनात्मक अनुशासन का भी प्रतीक है। इस क्रम में, वैशाली की शिक्षण प्रणाली ने तत्त्वज्ञान के निरंतर विमर्श और संदर्भों की परंपरा को जीवित रखा है, जो आज भी जैन विद्या के अध्ययन एवं अभ्यास की धरोहर बनकर विद्यमान है। इस प्रकार, वैशाली की सिद्धान्तिक पाठ परंपरा ने न केवल धार्मिक एवं दार्शनिक विमर्श को लगातार नवीनता दी, बल्कि समकालीन विचारधाराओं के विकास में भी एक सशक्त आधार प्रदान किया।[12]

6. वैशाली की सामजिक–आर्थिक संरचना और विद्या–परंपराओं का अन्तःसम्बन्ध

वैशाली की सामजिक और आर्थिक संरचना का उसके विद्या–परंपराओं के साथ गहरा संबंध रहा है। यहाँ का सामाजिक ढाँचा प्राचीन काल में विभाजन एवं वर्गीय व्यवस्था पर आधारित था, जिसमें वैशाली को उसकी समृध्द संस्कृति और विद्या–केन्द्र के रूप में विकसित किया। आर्थिक रूप से यह क्षेत्र मुख्यतः कृषि, व्यापार तथा हस्तकला पर निर्भर था, जिनके कारण यहां का समाज शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में सक्षम बना। व्यापारिक गतिविधियों के चलते वैशाली में विभिन्न देशों और संस्कृतियों के संपर्क से ज्ञान के नए आयाम प्रकट हुए, जिन्होंने विद्या–परंपराओं को समृद्ध और विविधता प्रदान की। सामाजिक संरचना में शिक्षा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण था, जहाँ ब्राह्मण, ज्ञानियों और आचार्यों का संबल था, जो दर्शन, विधि और नैतिकता के आधार पर नई विचारधाराओं का विकास करते रहे। विद्या–संस्थान और शिक्षण–पद्धतियों का विकसित होना जिले में शिक्षण, शोध और संवाद के क्षेत्रों को मजबूत बनाता रहा। विशेषकर बौद्ध एवं जैन धर्म के प्रभाव से यहाँ के शिक्षा संस्थान नैतिक और दार्शनिक विषयों में विशेष अध्ययन केंद्र बन गए, तथा इन परंपराओं ने ज्ञान के स्थायी धरोहर के रूप में अपनी पहचान बनाई। इन परंपराओं के निर्वाह में सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन का समरस समावेश आज भी इनके महत्व को स्पष्ट करता है, जहाँ विद्या और अर्थव्यवस्था दोनों संयुक्त रूप से विकसित हुए। इस तरह, वैशाली की सामाजिक–आर्थिक संरचना और उसकी विद्या–परंपराएँ एक–दूसरे के अभिन्न स्वरूप बनकर इस क्षेत्र को बारंबार नई ऊँचाइयों पर ले जाती रहीं।[13]

7. वैशाली के ज्ञान–परंपरा पर आधुनिक दृष्टिकोण

वैशाली की ज्ञान–परंपरा का अध्ययन आधुनिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे न केवल

इसकी ऐतिहासिक विरासत की समझ व्यापक होती है, बल्कि इन शिक्षाओं एवं संस्थानों के समयबोध्य् मूल्य भी स्पष्ट होते हैं। ज्ञात हो कि प्राचीन वैशाली शिक्षण एवं ज्ञान का प्रमुख केंद्र थी, जहां बौद्ध एवं जैन धर्म ने अपनी दीर्घकालिक परंपराएँ स्थापित की। इस परंपरा का अध्ययन केवल ऐतिहासिक प्रभाव का अन्वेषण ही नहीं करता, बल्कि वर्तमान में भी शिक्षण पद्धतियों, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक संगठनों में इनका प्रभाव दिखाई देता है।[14]

आधुनिक विद्वान इन ज्ञान परंपराओं का विश्लेषण करने के लिए अनेक दृष्टिकोण अपनाते हैं। इनमें ऐतिहासिक–आलोचना, सांस्कृतिक अध्ययन एवं शिक्षाविद् दृष्टिकोण मुख्य हैं। इन दृष्टिकोणों से न केवल वैशाली के शैक्षिक संस्थानों एवं उनके प्रभाव का सम्यक अनुसन्धान हो पाता है, बल्कि इससे प्राचीन विद्या–केन्द्र की विधायी, शिक्षण एवं नैतिक शिक्षाओं की प्रासंगिकता भी पुष्ट होती है। विशेषतः बौद्ध एवं जैन परंपराओं का सामाजिक एवं नैतिक योगदान आधुनिक समाज में भी अनवरत फल–फूल रहा है, जिससे वैशाली का ऐतिहासिक एवं वैचारिक महत्व अधिक उभरता है।[15]

सामाजिक समरसता एवं आर्थिक प्रगति के साथ ज्ञान–परंपरा का अंतर्घटन इस धारणा को पुष्ट करता है कि वैशाली का संस्थानिक एवं शिक्षण माहौल का संबंध उसकी समृद्ध सामाजिक संरचना एवं नैतिक मूल्यों से भी रहा है। अतः, आधुनिक दृष्टिकोण से वैशाली की ज्ञान–परंपरा का अध्ययन न केवल उसकी ऐतिहासिक महत्ता को समझने के लिए आवश्यक है, बल्कि इसकी शिक्षा, नैतिकता एवं सामाजिक न्याय की अंतर्निहित शिक्षाओं का समकालीन समाज में भी निरंतर महात्म्य रहना आवश्यक है।

8. निष्कर्ष

वैशाली का इतिहास एवं शिक्षा–संस्था के रूप में उसकी भूमिका भारतीय सभ्यता की प्राचीन अवधियों में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। यहाँ की असाधारण विद्या परंपरा और धार्मिक सक्रियताएँ शैक्षणिक गतिविधियों का व्यापक क्षेत्र थीं, जिन्होंने न केवल स्थानीय बल्कि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ज्ञान के प्रचार–प्रसार में भूमिका निभाई। बौद्ध और जैन धर्म इन संप्रदायों के विचारधारात्मक केंद्र रहे, जिन्होंने वैशाली को ज्ञान और नैतिकता के आदर्श स्थल के रूप में स्थापित किया। बौद्ध देश में महावीर विहार जैसे बड़े विद्या के केन्द्रों की स्थापना और शिक्षण गतिविधियों ने शिक्षा का स्तर ऊँचा किया। इन विश्वविद्यालयों में धार्मिक, दार्शनिक एवं व्यवहारी विषय शामिल थे, जिससे ज्ञान का व्यापक प्रसार हुआ। इसके अतिरिक्त, इन धर्मावलंबी संस्थानों ने शिक्षण पद्धतियों और पाठ्यक्रमों के विकास में नए मानदंड स्थापित किए। जैन धर्म ने भी वैशाली में अपनी शिक्षा परंपराओं का विस्तार किया, आचार्यों की शिक्षाएं और उनकी दिशानिर्देश विधियों ने नैतिक और दार्शनिक विश्लेषण को गहरा किया। यहां के साहित्य, विमर्श और शिक्षण–प्रणालियों में सिद्धांतात्मक और व्यावहारिक ज्ञान का समायोजन रहा। इन दोनों धर्मों की परंपराएँ वैशाली को एक ऐसा केन्द्र बनाती हैं, जहां ज्ञान का प्रचार–प्रसार और नैतिक मूल्यों का संरक्षण साथ–साथ चलता रहा।यह विद्या का केन्द्र सामाजिक और आर्थिक जीवन के साथ घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ था, जिससे शिक्षा और संगठित आर्थिक गतिविधियों में समन्वय मौजूद रहा। वर्तमान में भी इन परंपराओं का अध्ययन और विश्लेषण नई शैक्षणिक दृष्टिकोणों के माध्यम से किया जा रहा है, जो वैशाली की ऐतिहासिक और शिक्षाप्रद भूमिका को नई दिशा प्रदान करता है। अंततः, इन विविध स्रोतों से प्राप्त ज्ञान और धार्मिक शिक्षाएँ वैशाली को न केवल राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बल्कि शिक्षाप्रणाली एवं नैतिक मूल्यों के संजोने का भी प्रतीक बनाती हैं, जो भारतीय इतिहास और संस्कृति के सफर में एक उल्लेखनीय अध्याय हैं।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रामशरण. प्राचीन भारत का इतिहास. नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005, पृ. 112–113।
2. थापर, रोमिला. प्राचीन भारत. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2008, पृ. 145–146।
3. उपाध्याय, भगवत शरण. बौद्ध धर्म का इतिहास. वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, 1998, पृ. 76–77।
4. जैन, जगदीशचन्द्र. जैन धर्म का इतिहास. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2001, पृ. 95–96।
5. पाण्डेय, गोविन्दचन्द्र. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास. लखनऊ, हिंदी समिति, 1976, पृ. 64–65।
6. सिंह, उपेन्द्र. प्राचीन भारत का इतिहास. दिल्ली, पियर्सन एजुकेशन, 2009, पृ. 203–204।
7. मिश्र, रामनाथ. वैशाली का इतिहास. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 1985, पृ. 52–53।
8. झा, दयानंद. बिहार का प्राचीन इतिहास. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1999, पृ. 134–135।
9. त्रिपाठी, रामशंकर. प्राचीन भारत का इतिहास. इलाहाबाद, मोतीलाल बनारसीदास, 1992, पृ. 188–189।

10. दत्त, नलिनाक्ष. बौद्ध संघ और विहार परंपरा. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 1980, पृ. 121–122।
11. शास्त्री, हरिप्रसाद. जैन दर्शन और संस्कृति. वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, 2004, पृ. 89–90।
12. कुमार, अजीत. प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली. नई दिल्ली, अटलांटिक पब्लिशर्स, 2010, पृ. 57–58।
13. सिंह, विजय कुमार. वैशाली, इतिहास और संस्कृति. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2012, पृ. 71–72।
14. ललनजी गोपाल. प्राचीन भारत में नगर और व्यापार. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 1995, पृ. 146–147।
15. शर्मा, आर. के. प्राचीन भारतीय शिक्षा और संस्कृति. जयपुर, रावत पब्लिकेशन, 2007, पृ. 98।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

Cite this Article-

"प्रीति कुमारी", "प्राचीन विद्या–केन्द्र के रूप में वैशाली की भूमिकाः विशोकर बौद्ध एवं जैन धर्म के संदर्भ में", ResearchNext International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3107-9725 (Online), Volume:2, Issue:1, January-March 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."